Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 3, July-2023, ISSN 2230-7540

गाँधी दर्शन एवं वर्तमान विश्व राजनीति के बदलते परिप्रेक्ष्य

Geeta[1]*, Dr. Priyanka Guru[2]

[1] Research Scholar, Madhyanchal Professional University, Bhopal

[2] Professor, Department of Political Science, Madhyanchal Professional University, Bhopal

सार - *वर्तमान विश्व राजनीति के बदलते परिप्रेक्ष्य में मानव जाति आषा एवं आकांक्षा के संयुक्त भाव से भविष्य की ओर देख रही है। एक ओर वैज्ञानिक और तकनीकी क्रांति का अपार वैभव एवं तिलिस्म है, वही दूसरी ओर व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्तर पर बढती हिंसा एवं प्रतिस्पर्धा ने नैतिक एवं मानवीय मूल्यों को विस्मृत कर जीवन को अस्थिर एवं असुरक्षित बना दिया है। आज उरजीविता का भयावह संकट विश्वव्यापी चिंता का विषय बन गया है।*

वैज्ञानिक प्रौद्योगिकीय विकास, राजनैतिक संगठन एवं प्रक्रिया, अर्थव्यवस्था, संस्कृति, सामाजिक अंतर्सम्बन्ध एवं व्यक्ति की मानवीयता सभी क्षैत्रों में निरंतर बदलाव दिखाई देता है। इस परिवर्तन का क्षैत्र एवं प्रभाव इतना व्यापक है कि कभी 'इतिहास के अन्त' की चर्चा होती है, तो कभी 'सामाजिकता की समाप्ति' की तथा कभी औद्योगिक व्यवस्था एवं प्रबन्धन के विरासत की समाप्ति की। बढता हुआ भूमण्डलीकरण राज्य की संप्रभुता, सामाजिक-सांस्कृतिक बहुलता एवं व्यक्ति की स्वायता के संदर्भो में अब तक की संभवतः सबसे गम्भीर चुनौती प्रस्तुत कर रहा है। सदी के अंतिम दशक में समाजवादी राजव्यवस्थाओं के विघटन के बाद यह धारणा बलवती हुई है कि अब विश्व में मात्र पूँजीवादी-उदारवादी विकल्प ही शेष है तथा यही श्रेष्ठतम विकल्प भी है। यह धारणा नितांत भ्रामक है।

कीवर्ड - *सामाजिक-सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय, भूमण्डलीकरण, मानवीयता*

----------X----------

परिचय

बीसवी सदी के प्रारम्भ में ही गाँधी ने परिवर्तन की इस दिशा का सशक्त प्रतिवाद किया था। राज्य का दमनात्मक संयंत्र हो अथवा सामाजिक संरचना की प्रतिबंधित संस्थाएँ, सांस्कृतिक विरासत की वर्चस्ववादी मूल्य व्यवस्थाएँ हो अथवा आधुनिक विकास की अवधारणा द्वारा षोषण की वैधता-गाँधी का प्रतिवाद बुनियादी था, सम्पूर्ण था। वस्तुतः गाँधी का प्रतिवाद जिन मानवीय एवं सामाजिक सरोकारों से संपृक्त था वे आज भी उतने ही महत्वपूर्ण एवं समाधान की प्रतीक्षा में है, जितने गाँधी के स्वयं के काल में थे। संभवतः आगामी सदी में भी रहेंगे, क्योंकि फिलहाल परिवर्तन की उक्त दिशा परिवर्तित होती नही दिखाई देती। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि गाँधी ने मात्र प्रतिवाद के लिये प्रतिवाद नहीं किया, प्रत्युत वैकल्पिक दिशा भी प्रस्तुत की- व्यक्ति, संरचना, इतिहास सभी स्तरों पर और उनके विकल्प भी, उनके प्रतिवाद की तरह उनके संदर्भ की सामयिकता से बहुत आगे, नवीन संदर्भो के लिये प्रासंगिकता की संभावनाएँ समाहित किये हुए है।

विश्व पटल पर महात्मा गाँधी का अभ्युदय एक महान घटना है। गाँधीजी को दो रूपों में जाना जाता है- राजनेता एवं अध्यात्म। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में प्रमुखतः दो बातों की भूमिका होती है- अन्तःचेतना एवं प्रवर्तित परिस्थितियाँ। अन्तःचेतना स्वतः स्फूर्त होती है। इस आधार पर होने वाले व्यक्तित्व निर्माण के लिये पृथक प्रयासों की आवष्यकता नहीं होती। इसका निर्माण पेड़ों पर पत्तियाँ आने के सदृष स्वाभाविक होता है। इस कारण इसमें कृत्रिमता नहीं होती यह शाष्वत होता है। दूसरी ओर देष काल की विद्यमान परिस्थितियाँ व्यक्ति को कुछ विषिष्ट आचरण हेतु प्रेरित/विवष करती है। इसके लिये व्यक्ति कुछ खास प्रयास करता है, संभव है इस

www.ignited.in

निर्मित किया गया आचरण व्यक्ति के मौलिक स्वभाव से कुछ विचलित हो सकता है। वैषिष्ट्य एवं संस्कारित होने के कारण इसमें कृत्रिमता रहती है और इस कारण यह चिरन्तन हो, ऐसा आवश्यक नहीं। किन्तु महापुरूषों में यह सामान्य लक्षण होता है कि वे परिस्थितिवश उठाये गये कदमों में भी भरपूर संयम का बर्ताव करते है, इस कारण ऐसे आचरण में भी वे किसी सीमा तक अपने स्वाभाविक गुणों की छाप छोड़नें में सफल रहते है। गाँधीजी के संदर्भ में इसे देखा जाये तो सत्य, अहिंसा संबंधी मौलिक सद्गुण उनमें स्वाभाविक रूप से विद्यमान थे। इन मौलिक सद्गुणों का प्रयोग उन्होनें कृत्रिम रूप से स्वदेशी, असहयोग, सविनय अवज्ञा, नमक कानून को भंग करना, भारत छोडो आंदोलन, करो या मरो का नारा एवं स्वतंत्रता के समय गाँधीजी का आचरण के रूप में किया। गाँधीजी ने अपने लंबे राजनीतिक जीवनकाल में अपने चरित्र के मौलिक गुणों पर सामान्यतः प्रवर्तित परिस्थितियों को हावी नहीं होने दिया और राजनीतिक स्वतंत्रता आंदोलन को अपने अन्तर्मन की आवाज के अनुरूप चलाने का सफल प्रयोग किया। यह गुण उनकी महात्मा की उपाधि को चरितार्थ कर देता है।

गाँधी चिंतन की मूल प्रत्ययात्मक स्थापनाएँ उन्नीसवी सदी के उत्तरार्ध से बीसवी सदी के मध्य तक उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद तथा दमन के विरूद्ध संघर्ष में विकसित हुई। स्वाधीनता संग्राम की दीर्घावधि में अनेक स्तरों पर संशोधन, परिमार्जन एवं पुनर्व्याख्या भी प्रस्तुत की गई, किंतु मूल प्रत्ययात्मक मान्यताओं पर गाँधी जीवन पर्यन्त अडिग रहे। मूलभूत मूल्यों के प्रष्न पर उन्होने समझौता नहीं किया। साथ ही, राजनैतिक रणनीति के स्तर पर उन्होनें अपने प्रत्ययों को पर्याप्त लचीलापन एवं खुलापन दिया। संभवतः इसीलिये वे विपरीत परिस्थितियों में भी सर्ववर्गीय सर्वजातीय राष्ट्रीय जन-आंदोलन विकसित करने में सफल रहे।

इस नयी सदी में गाँधीजी के दर्शन की नयी परिभाषा की आवश्यकता है। आज प्रश्न यह भी उठाया जा रहा है कि क्या गाँधीजी के दर्शन की इस नयी सदी के बदलते हुए परिदृष्य में उतनी ही प्रासंगिकता है, जितनी पहले थी। आज इस ग्लोबल विश्व के समक्ष जो विश्व स्तरीय चुनौतियां है, उन्हें देखते हुए गाँधी दर्शन आज भी उतना ही स्वीकार्य है जितना पहले था, शायद उससे भी कहीं ज्यादा। वर्तमान राजनीतिक समाज में गाँधीवादी वैचारिक चिंतन एक प्रभावी मार्गदर्शक साबित होगा। गाँधीजी की साध्य-साधन की अवधारणा लक्ष्य एवं लक्ष्य प्राप्ति के साधनों की पवित्रता पर बल देती है, जो कि मानव के लिये सद्मार्ग का रास्ता निष्चित करती है। अन्यायपूर्ण समाज का विरोध किस प्रकार किया जाये, इस दृष्टि से सत्याग्रह की अवधारणा अत्यंत प्रभावी उपाय है।

आज गाँधीवादी दर्शन संपूर्ण विश्व को एक नया दिशा-बोध दे रहा है। गाँधी दर्षन की नयी व्याख्या हमारे सामने है। हिंसा, आतंक, गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी, बिखराव और दहषत आदि समस्याओं से जूझते हुए इस विश्व को इन दिनों में गाँधी दर्शन और उनका अहिंसा का प्रयोग-सूत्र ही एकमात्र चिराग है, जो इसे नया रास्ता दिखा सकता है। वर्तमान में विश्व मे कई आतंकवादी संगठन विद्यमान है जो अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये विभिन्न राष्ट्रो के राजनीतिक नेतृत्व पर दबाव बनाने में कसर बाकी नहीं छोड़ रहे है। आतंकवादी संगठन आई. एस. इसका ज्वलंत उदाहरण है, जिसने अपनी सैनिक शक्ति किसी राष्ट्र की सैनिक शक्ति से अधिक मजबूत कर संपूर्ण विश्व की नाक मे दम कर रखा है। आई. एस. ने अपने को न केवल लीबिया, सीरिया, ईराक तक सीमित रखा वरन् इसकी इच्छा अब यूरोप व एशिया में भी अपना दबदबा साबित करने की है। अपनी इच्छाओं को साकार रूप देने के लिये ये संगठन अमानवीय हथकंडे अपनाने से भी नहीं चूकते। प्रवासी नागरिक भी इनके अत्याचारों का शिकार बनते जा रहे है। आज समाचार पत्रों की प्रमुख खबरें इन्ही घटनाओं से संबंधित होती है।

राजनीति के आवष्यक तत्व

1. राजनीति मनुष्य की सामाजिकता के साथ जुड़ी हुई मौलिक मानवीय प्रक्रिया है।
2. राजनीति स्थानीय स्तर से अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक सर्वव्यापक प्रक्रिया है।
3. राजनीति में निरंतर संघर्ष की स्थिति के कारण सक्रियता विद्यमान है।
4. राजनीति की प्रकृति परिवर्तनषील है अतः गतिशीलता इसका आवश्यक तत्व है।
5. राजनीति शक्ति के लिये संघर्ष है।
6. राजनीति निरंतर बनती-बिगड़ती संभावनाओं की कला है।

विश्व राजनीति

विश्व राजनीति एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति शब्दों को परस्पर समान अर्थो में प्रयोग में लाया जाता है। कोई स्पष्ट सीमा रेखा नहीं है जो इनके मध्य अंतर दर्शा सके। गाँधीजी के

www.ignited.in

विश्वग्राम की संकल्पना सिद्ध करने की दृष्टि से विश्व राजनीति के अर्थ पर विचार करना आवश्यक है।

विश्व राजनीति का अर्थ पूर्व में यूरोपीय राष्ट्रों की आपसी राजनीति से लगाया जाता था। उस समय लगभग समूचे विश्व में यूरोपीय राष्ट्रों की राजनीति ही प्रभावी थी। उनकी शक्ति-सम्पन्नता, औद्योगिक प्रगति, विकसित तकनीक और प्रसारवादी नीति से परिपूर्ण राजनीति विश्व के अन्य देषों की राजनीति से शांत और स्थानीय प्रकृति की थी। प्रथम महायुद्ध के बाद अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक वातावरण में परिवर्तन हुआ। दो महायुद्धों के बीच विश्व के एक बड़े भाग में आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और तकनीकी क्षैत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के विरूद्ध भीषण प्रतिक्रिया हुई। फलतः एशिया, अफ्रीका और लेटिन अमेरिका जैसै महाद्वीपों के अनेक राष्ट्र स्वतंत्र हो गए। संयुक्त राष्ट्र संघ एक विश्वव्यापी शांति संगठन के रूप में उभरा। इन परिवर्तनों के कारण अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को केवल यूरोप की राजनीति मानने की स्थिति समाप्त हो गई। अब विश्व राजनीति का केंद्र बिन्दु उत्तरी अमेरिका, लेटिन अमेरिका, साम्यवादी देश, एशिया, अफ्रीका बन गया। विभिन्न राष्ट्रों के पारस्परिक संबंधों की राजनीति ही विश्व राजनीति है। अंतर्राष्ट्रीय क्षैत्र में विभिन्न राष्ट्र अपने हित-साधन के लिए आपसी संबंधों में संघर्ष की जिस अवस्था में रहते है, उसी का समग्र अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय राजनीति या विश्व राजनीति अध्ययन का विषय है। विश्व राजनीति के तीन आवश्यक तत्व है - राष्ट्रीय हित, संघर्ष और शक्ति। राष्ट्रीय हित उद्देश्य है, संघर्ष स्थिति विशेष है एवं शक्ति उद्देश्य प्राप्ति का साधन कही जा सकती है। हँस जे. मॉर्गेन्थो का मत है, " राष्ट्रों के मध्य शक्ति के लिए संघर्ष तथा उसका प्रयोग अंतर्राष्ट्रीय राजनीति है।" मॉर्गेन्थो के तर्क में बल है किंतु यह नहीं भूलना चाहिए कि षक्ति एक साधन मात्र है साध्य नहीं। राष्ट्र केवल शक्ति के लिए ही कोई राजनीति संचालित नहीं करते। शक्ति चाहे अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का प्रमुख तत्व हो परंतु उसकी सीमाएं भी है।

समकालीन विश्व राजनीति की नवीन दिषाऐं

बीसवी शताब्दी के अंतिम दशक से विश्व के सम्मुख उत्पन्न नवीन प्रवृत्तियों का विश्लेषण निम्न बिंदुओं में किया जा सकता है-

1. वर्तमान में आणविक हथियारों से सम्पन्न राष्ट्रों के कारण विष्व राजनीति के समक्ष युद्ध के भय की तीव्रता प्रबल रूप से विद्यमान है। यह समझा जाने लगा है कि ऐसा कोई भी युद्ध समूची अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था के लिये भयावह खतरा है।

2. वर्तमान विश्व राजनीति द्विध्रुवीय विश्व से बहुकेंद्रवाद की ओर बढ़ रही है। कभी विरोधी रहने वाली विचारधाराएँ आज एक-दूसरे के निकट आकर सह-अस्तित्व की बात करने लगी है। अमेरिका एवं चीन में निकट संबंध इसका उदाहरण है। एशिया और अफ्रीका के नवजाग्रत राष्ट्रों ने द्विध्रुवीयता से अलग रहकर इसे चुनौती दी है। भारत इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

3. आज क्षैत्रीय संगठनों के रूप और प्रकृति में अंतर आया है। पूर्व में जहाँ इन संगठनों का आधारभूत तत्व केवल राष्ट्र की सुरक्षा था एवं इसलिये सैनिक संगठनों सीटो, सेन्टो का निर्माण किया गया था। वर्तमान विश्व के क्षैत्रीय संगठनों के समक्ष संपूर्ण विष्व के संदर्भ में अपना महत्व, संबंध एवं प्रभाव प्रमुख मुद्दा बनकर सामने आया है।

4. समकालीन विश्व राजनीति में निःशस्त्रीकरण ने एक अधिक संयत प्रतिमान पर बल दिया है। द्वितीय महायुद्धोत्तर युग में इस पर अधिक बल दिया जाने लगा। विश्व राजनीति में अधिकांष राष्ट्र निःशस्त्रीकरण को युद्ध के खतरे को कम करने वाला उपाय मानने लगे है। आणविक हथियारों की विध्वंसक षक्ति ने निःशस्त्रीकरण की भावना को अधिक महत्वपूर्ण बनाया है।

5. वर्तमान विश्व में सोवियत संघ के विघटन के बाद अमेरिका एक मात्र महाशक्ति बना हुआ है। शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद दक्षिण, पूर्व एवं पश्चिम एशिया के तीन क्षैत्र अपनी सामरिक स्थिति के कारण विश्व के प्रधान संकट स्थल बने हुए है। वर्तमान विश्व राजनीति में

साम्राज्यवाद तो अस्ताचल की ओर है लेकिन आर्थिक एवं राजनीतिक उपनिवेशवाद उदय के लिए प्रयत्नशील है।

6. वर्तमान विश्व की बदलती राजनीतिक परिस्थिति में भी गुटनिरपेक्ष आंदोलन की प्रासंगिकता बनी हुई है। शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद विश्व में संयुक्त राज्य अमेरिका एकमात्र महाषक्ति है लेकिन उत्तर-दक्षिण संवाद, दक्षिण-दक्षिण सहयोग, विकासशील और अविकसित देशों के बीच सहयोग की भावना विकसित करने एवं विश्वशांति को सुरक्षित रखने में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की भूमिका महत्वपूर्ण है।
7. तृतीय विश्व के विकासशील राष्ट्र चाहते है कि विश्व अर्थव्यवस्था पर विकसित देशों का वर्चस्व न रहे तथा विश्व अर्थव्यवस्था का संचालन एक-दूसरे राष्ट्र की प्रभुसत्ता का सम्मान करते हुए किया जाये। विकसित राष्ट्र अपने आर्थिक स्वार्थो का त्याग करने को तैयार नहीं है।
8. वर्तमान विश्व में आतंकवाद एक प्रबल चुनौती बनकर सामने आया है विश्व में अनेक आतंकवादी संगठन कार्यरत है जैसै- आई.एस.आई.एस., अलकायदा, जैश-ए-मोहम्मद, अलफतह आदि जो विश्व राजनीति पर दबाव डालकर अपने हित साधने की कोशिश में लगे हुए है।

वर्तमान समय में अंतर्राष्ट्रीय स्तर की अनेक समस्याएँ विष्व राजनीति को प्रभावित कर रही है, जिनका समाधान करने के प्रयास जारी रहना आवश्यक है।

वर्तमान विश्व में राष्ट्रवाद एवं अंतर्राष्ट्रवाद के मध्य तालमेल स्थापित करना। राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के बीच सामंजस्य स्थापित करना। विश्व के राष्ट्रों में व्याप्त आर्थिक असमानताओं को समाप्त करना।

गाँधी दर्शन एवं हिंसा

गाँधीजी के अनुसार हिंसा मन से शुरू होती है, वाणी उसे प्रकट करती है और षरीर उसे कार्यरूप देता है। जैसै किसी चींटी की मृत्यु में न मन का साथ था, न वाणी का और कर्म भी हिंसा के उद्देष्य से नहीं था। तो इस प्रकार की हिंसा को हिंसा नहीं माना जा सकता। केवल शारीरिक शक्ति ही नही, मन और वचन भी हिंसा के साधन है। ठीक इसके विपरीत अहिंसा भी मन, वचन, कर्म से अपना प्रभाव डालती है। मन, वचन, कर्म तीनों शुद्ध पवित्र हो, हिंसा शून्य हो, तभी वह पूर्ण अहिंसा है। जैसै हिंसा का मूल मन है, उसी प्रकार अहिंसा का मूल भी मन है।

उन्होनें हिंसा का अर्थ बड़े विश्लेषण के साथ स्पष्ट किया है। हिंसा के अंतर्गत हत्या, किसी को किसी प्रकार की पीड़ा देना, किसी को क्षति या हानि पहुंचाना ये सब आ अवश्य जाते है, किंतु ये अपने में हिंसा नहीं है। हिंसा के हिंसा होने के लिए इसके पीछे की मानसिकता ही प्रधान है। यदि प्राण लेना या पीड़ा पहुंचाना या क्रोध से, किसी स्वार्थ से, ईष्र्या से या जानबूझकर किया गया कार्य हो तो वह हिंसा है।

उनके अनुसार चोरी करना, झूठ बोलना, घृणा करना, लोभ, क्रोध, लालसा इत्यादि हिंसा के अंतर्गत आते है। सत्य का साथ न देना भी हिंसा है। अपने पास धन होने पर भी किसी गरीब पर दया न दिखाना हिंसा है। भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरू जैसै कई क्रांतिकारियों ने राष्ट्रहित के कार्य तो किये, परंतु उनके द्वारा अपनाये गए तरीके हिंसा का रूप थे।

गाँधीजी ने हिंसा की सीमा रेखा दर्शाते हुए बताया है कि, "मैं एक क्षण के लिए भी किसी प्राणी को असहाय अवस्था में धीरे-धीरे होने वाली मृत्यु या भयंकर कष्ट भोगते हुए नहीं देख सकता। जिस प्रकार रोगी के कल्याण के लिए उसके शरीर पर चाकू का प्रयोग करके षल्य चिकित्सक कोई हिंसा नहीं करता अपितु विशुद्ध अहिंसा के अनुसार ही आचरण करता है। हिंसा की सीमाएं है और वह असफल हो सकती है, परंतु अहिंसा की कोई सीमाएं नहीं है और वह कभी असफल नहीं हो सकती।

उन्होनें कहा था, "मैंने तलवार छोड़ी सो इस कारण नहीं कि वे मुझे चलानी नहीं आती अथवा मैं शक्तिहीन हूँ। आज भी मैं तलवार को तोड़ने की शक्ति रखता हूँ। नुकीली कटार को अगर किसी व्यक्ति के पेट में भोंकना चाहूँ तो भोंक सकता हूँ। तथापि मैंने इसे त्याग दिया है, क्योंकि इससे कुछ लाभ नहीं है

विश्व राजनीति एवं हिंसा

विश्व के किसी भी भाग में हिंसा का किसी भी रूप में विद्यमान होना न केवल उस राष्ट्र के लिये आंतरिक रूप

www.ignited.in

से हानिकारक है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी उस राष्ट्र को कमजोर बनाने के लिये उत्तरदायी है। विश्व राजनीति एवं हिंसा में परस्पर संबंध निम्न बिंदुओं में स्पष्ट है -

1. हिंसक घटनाओं से विष्व जनमत में भय पैदा होता है। जिससे सत्ता परिवर्तन की स्थितियाँ बनती है। कई बार सत्तारूढ़ शासनतंत्र भी जनता में भय की स्थिति पैदा करने के लिए हिंसा को अंजाम देते है।
2. शासनतंत्र अपनी असफलताओं को छिपाने के लिए भी हिंसा का रास्ता अपनाते है। जिससे अपने कार्यो का हिसाब देने से बचा जा सके।
3. राजनीतिक फायदा उठाने के लिये भी हिंसा का प्रयोग किया जाता है। आमतौर पर ऐसी स्थिति चुनावों से पूर्व देखी जाती है।
4. हिंसात्मक घटनाओं के पीछे स्वेच्छाचारी संगठनों के निर्माण का उद्देश्य भी छिपा हुआ है। समान विचारधारा वाले व्यक्तियों से मिलकर राजनीतिक तंत्र पर दबाव डाला जाता है एवं अपने हितों की पूर्ति सुनिश्चित की जाती है।
5. राष्ट्र के विकास में बाधा पैदा करने हेतु असामाजिक तत्वों द्वारा हिंसा के प्रयोग को अंजाम दिया जाता है।

विश्व राजनीति का आतंकवाद पर प्रभाव

विश्व में आतंकवाद को समाप्त करने हेतु विश्व राजनीतिक तंत्र को प्रभावी कदम उठाने होंगे। इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख समस्या का दर्जा देते हुए दुनिया के राष्ट्रों को प्रयास सुनिष्चित करने होंगे। कुछ चयनित बिंदु निम्न है जिनके द्वारा विश्व राजनीति आतंकवाद को प्रभावित कर शनैः शनैः उसके वेग को समाप्त कर सकती है -

1. किसी भी राष्ट्र की शांतिपूर्ण नीतियों से आतंकवाद को झटका लगता है। विभिन्न राष्ट्रों के मध्य होने वाले शांति समझौतो के फलस्वरूप आतंकी स्वयं को हाशिये पर खड़ा महसूस करते है। अतः शांतिपूर्ण सम्मेलन, शांति समझौते आदि के कई उदाहरण है जिनसे आतंकवाद की चर्चित दशा में कमी महसूस की गई। जैसै- जून 2012 में शंघाई सहयोग संगठन के देशों ने शांति मिशन-2012 नामक आतंकवाद विरोधी संगठन बनाया, सितम्बर 2014 में दक्षेस के आठ सदस्य देशों ने आतंकवाद, मानव तस्करी, साइबर अपराध और भ्रष्टाचार की साझा चुनौतियों से मुकाबला करने का संकल्प लिया, मई 2015 में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दक्षिण कोरिया में कहा कि, "हमारे क्षैत्र के लोगों को मिलकर आतंकवाद जैसी चुनौतियों से निपटना होगा।" अप्रेल 2015 में नरेन्द्र मोदी एवं जर्मनी की चांसलर एंजेला मर्केल के मध्य आतंकवाद विरोधी समझौता हुआ। इस प्रकार शांतिपूर्ण नीतियों को प्रोत्साहन देकर आतंकवाद को प्रभावित किया जा सकता है।
2. विश्व राजनीति में राष्ट्रों की मजबूत आंतरिक स्थिति भी आतंकवाद को आवश्यक रूप से प्रभावित करती है। आतंकी गतिविधियाँ कमजोर राष्ट्रों के प्रति अधिक सफल होती देखी गई है। अतः राष्ट्रों को अपनी आंतरिक दृष्टि से आर्थिक एवं सामाजिक दृढ़ता बनाए रखने के प्रयास लाभदायक सिद्ध होते है।
3. विश्व में जो राष्ट्र आतंकवाद का देश झेल रहे है, वे राष्ट्र अपनी सामरिक स्थिति के कारण किन्ही विकसित राष्ट्रों या विश्व के अन्य राष्ट्रों से जुड़े हो तब भी आतंकवाद को प्रभाव में आना ही पड़ेगा, उसकी एकतरफा जीत सुनिष्चित नहीं होगी।
4. आतंकवाद पर विश्व राजनीति का नकारात्मक प्रभाव भी देखा जा सकता है। परस्पर विरोधी राष्ट्रों के बीच आतंकवाद की स्थिति इसका परिणाम है। एक राष्ट्र एवं उसके समर्थक राष्ट्र अन्य राष्ट्र में आतंकवादी गतिविधियों को अपना समर्थन देते है। भारत के कष्मीर में आतंकवाद पर पाकिस्तानी राजनीति का ही प्रभाव है।
5. संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से भी विश्व राजनीति आतंकवादी गतिविधियों को नियंत्रित एवं प्रभावित कर सकती है। विश्व के राष्ट्रों के साझा प्रयासों से आतंकवाद विरोधी एजेण्डा लागू किया जा सकता है। अप्रेल 2015 में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कनाडा यात्रा के समय

उन्होनें कहा, "आतंकवाद मानवता का दुश्मन है, इससे लड़ने के लिये सभी को सजग रहना चाहिए।" कनाडा की संसद पर आतंकी हमले के मुद्दे पर स्टीफन हार्पर ने कहा कि, "यू.एन. की पहल से विश्व को संदेश मिले कि वह आतंकवाद को रोकने को प्रतिबद्ध है। यू.एन. तय करे कि आतंकवाद क्या है ? कौन इसमें सहयोग कर रहा है ?"

6. विश्व राजनीति में स्थिरता का प्रारंभ आतंकवाद के मार्ग में रूकावट है। परंतु इसका प्रारंभ राष्ट्रीय राजनीति में बहुमत के शासन से ही संभव है। किसी भी राष्ट्र की अल्पमत सरकार मजबूत फैसले नहीं ले सकती।

7. वर्तमान विश्व में आतंकवाद के सक्रिय विरोधी के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका दिखाई देता है। 11 सितंबर 2001 को न्यूयार्क में विश्व व्यापार संगठन की इमारत पर आतंकी हमला दिल दहला देने वाली घटना थी। इसके परिणामस्वरूप अमरीका सक्रिय विरोधी के रूप में सामने आया। अलकायदा के आतंकी ठिकानों पर हमला, इराक में सद्दाम हुसैन शासन का अंत, ओसामा बिन लादेन का खात्मा और वर्तमान में आई.एस.आई. एस. को समाप्त करने का प्रण भी एक बार तो आतंकवाद के मार्ग में रूकावट का प्रभावपूर्ण उदाहरण है।

गाँधीजी एवं विश्व राजनीति: विश्वबन्धुत्व का दर्शन

जिस अर्थ में राजनीति शब्द का प्रयोग साधारणतः किया जाता है, उससे गाँधीजी को वस्तुतः कोई प्रयोजन नहीं था। गाँधीजी मूलतः धार्मिक व्यक्ति थे और उन्होनें राजनीति के क्षैत्र में जो कुछ किया वह भी धार्मिक भावना के अंतर्गत ही किया। भारतीय परंपरा के संत होने के नाते वे मनुष्य जाति की सेवा को ही भगवान की सŭची सेवा समझते थे। मनुष्य जाति की सेवा करने के लिये ही वे राजनीति में आये। उन्होनें हरिजन में लिखा था, "मेरे देशवासी मेरे सबसे निकट के पड़ौसी है। वे इतने असहाय, निरूपाय व निर्जीव हो गये है कि मुझे उनकी सेवा में लग जाना आवश्यक है। यदि मैं समझता कि भगवान मुझे हिमालय की कंदरा में मिलेंगे, तो मैं तुरंत वहाँ चला जाता पर मैं मानता हूँ कि मानव समूह से पृथक मैं उन्हें नहीं पा सकता।" इससे स्पष्ट है कि गाँधीजी ने मानव जाति की सेवा ईश्वर की प्राप्ति के एक साधन के रूप में ग्रहण की और उन्होनें राजनीति में भाग इसलिये लिया कि राजनीति के माध्यम से जनसेवा करके वे ईश्वर की प्राप्ति कर सके। उनकी जनसेवा का विस्तृत रूप विश्व पटल पर विश्व बंधुत्व के रूप में प्रस्फुटित हुआ। गाँधीजी की राजनीति वस्तुतः उनकी ईश्वर प्राप्ति की साधना का अंग मात्र थी। ईश्वर की प्राप्ति की साधना का अंग मात्र होने के कारण उनकी राजनीति वह राजनीति नहीं थी, जिसे साधारणतः राजनीति कहा जाता है। उनकी राजनीति छलकपटपूर्ण राजनीति न होकर धर्म पर आधारित राजनीति थी।

चूँकि राजनीति की दिशा राज्य के कार्यो एवं उसकी स्थिति पर निर्भर करती है, अतः गाँधीजी ने अपने राज्य संबंधी विचार दिये। जिसमें उन्होनें राज्य की मूल प्रकृति एवं उसके स्वरूप की चर्चा की एवं आवश्यक दिशानिर्देश प्रदान किये।

गाँधीजी के राज्य संबंधी विचार मूलतः अराजकतावादी थे। उनका मत था कि राज्य व राजकीय शक्ति की आवश्यकता इसलिये पड़ती है कि मनुष्य अपूर्ण है। यदि मानव जीवन इतना पूर्ण हो जाये कि वह स्वयं संचालित हो सके, तो फिर राज्य व राजकीय शक्ति की समाज को आवश्यकता ही न रहे। गाँधीजी के मतानुसार वह समाज, जिसमें राज्य व राजनीतिक शक्ति का अभाव होगा और व्यक्तियों के पारस्परिक संबंध सत्य व अहिंसा पर आधारित होंगे, आदर्श समाज होगी। क्योंकि ऐसी ही सामाजिक स्थिति में मनुष्य वास्तविक रूप से स्वतंत्र होगा।

गाँधीजी के अनुसार अपने वर्तमान रूप में राज्य केन्द्रीकृत व संगठित हिंसा का प्रतीक है। जितनी अधिक शक्ति उसके हाथ में रहती है, वह व्यक्ति के स्वाभाविक विकास मे उतना ही बाधक सिद्ध होता है। अतः यदि व्यक्ति को अपने स्वाभाविक विकास का अवसर प्रदान करके जीवन के चरम् उद्देश्य की प्राप्ति करानी है तो यह आवश्यक है कि सामाजिक व्यवस्था प्रधानतः सत्य व अहिंसा पर आधारित हो तथा राजकीय-शक्ति का प्रयोग न्यूनतम हो। गाँधीजी के राज्य संबंधी विचारों को, इस प्रकार आदर्श में अराजकतावादी तथा व्यवहार में व्यक्तिवादी कहा जा सकता है, परन्तु उनका व्यक्तिवाद वह पाश्चात्य

www.ignited.in

व्यक्तिवाद नहीं है, जिसका परिणाम पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की स्थापना होती है। राज्य के हस्तक्षेप के आधार पर उनका ध्येय व्यक्तिगत स्वेच्छाचारिता का समर्थन करना नहीं है, वरन् उनका मत है कि व्यक्ति स्वयं अपना जीवन इस प्रकार व्यतीत करे कि सामाजिक दोष उत्पन्न न होने पाये, जिनके लिये पाश्चात्य व्यक्तिवाद बदनाम है।

संदर्भ

1. उपाध्याय, हरिभाऊ, स्वतंत्रता की ओर, सस्ता साहित्य मंडल, नईदिल्ली, 1961
2. वाजपेयी एवं शुक्ल, गांधी का आर्थिक चिंतन, कॉलेज बुक डिपों, त्रिपोलिया जयपुर, 1998
3. वाजपेयी, एएन .डी ., गांधी का आर्थिक चिंतन, कालेज बुड डिपो, मुम्बई, वर्मा, दीनानाथ, भारत में उपनिवेशवाद एवं राष्ट्रवाद, ज्ञानदा प्रकाशन नई दिल्ली, 2004
4. विघालंकार, सत्यकेतु, भारत के राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली, 2008,
5. शर्मा, कालूराम एवं प्रकाश व्यास, आधुनिक भारत का राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक इतिहास, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2004,
6. शर्मा, नरेन्द्र, मोहनदास करमचंद गांधी, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
7. रामविलास शर्मा, भारत में अंग्रेजी राज और माक्र्सवाद, खण्ड-2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002,
8. शुक्ल, चंद्रशंकर, (सं(., गांधी जी के संपर्क में, वोरा एण्ड कंपनी पब्लिशर्स लिमिटेड, बंबई, 1947
9. टंडन, पी.डी., गांधी अहिंसा का सेनानी, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली, 1969
10. टंडन एवं वुल्जले, (अनुवादित(, गांधी अहिंसा का सेनानी, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली, 1969
11. रवीन्द्र कुमार, स्वतंत्रता संग्राम के गांधी वादी युग का संक्षिप्त परिचय, कल्पाज पब्लिकेशंस, दिल्ली,
12. रोला, रोमां, महात्मा गांधीः जीवन और दर्शन, (अनु प्रफुल्ल-.चंद्र ओझा 'मुक्त'), लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002,
13. सरकार, सुमित, आधुनिक भारत, (अनुसु-शीला डोभाल(, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012
14. सतीश कुमार, गांधीवादः विविध आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाश्न, वाराणसी, 2006 54. शरण, गिरिराज, गांधी ने कहा था, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 2001,
15. सिंह, दशरथ, गांधीवाद को विनाबा की देन, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1975

Corresponding Author

Geeta*

Research Scholar, Madhyanchal Professional University, Bhopal